بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

Office Of The sadar Majlis Ansarullah Bharat

دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت

Ph: +91-01872-220186, Fax : +91-01872-224186, Mob. +91-94170-20616, E-Mail : ansarullahbharat@gmail.com

सारांश खुत्बः जुज़्अः सैय्यदना ख़लीफ़तुल मसीहिल ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दिनांक 11.12. 2015 मस्जिद बैतुल फ़तूह लंदन।

दुनया इस समय आग के गढ़े के जिस किनारे पर खड़ी है, किसी समय भी ऐसी प्रस्थितियाँ हो सकती हैं कि वह इसमें गिर जाए। ऐसे समय पर दुनिया को इस आग में गिरने से बचाने के लिए प्रयास करना तथा अमन व सलामती देने का काम करना एक अहमदी का कर्तव्य है और अहमदी ही कर सकते हैं। हमने अपने ज्ञान एंव कर्मों के द्वारा बताना है कि दुनया को अपनी सलामती तथा शांति का भय इस्लाम से नहीं बल्कि उन लोगों से है जो इस्लाम के विरोधी हैं।

तशह्हुद तअव्वुज़ और सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

पिछले दिनों एक यहाँ अख़बार में कालम लिखने वाले ने लिक्खा तथा इसी प्रकार एक आस्ट्रेलियन राजनेता ने भी कहा कि इस्लाम की शिक्षाओं में जो जिहाद तथा कुछ अन्य निर्देश हैं, उन्हीं के कारण मुसलमान कट्टर पंथी बनते हैं। इस्लामी आदेशों के विषय में पिछले दिनों यू.के. के भी एक राजनीतिज्ञ ने यही कहा था कि इस्लाम में कुछ न कुछ तो कट्टर वाद के निर्देश हैं, सज़्ती करने के आदेश हैं जिसके कारण मुसलमानों की कट्टर वाद की ओर रूचि है। कहने तथा लिखने वाले यह भी लिखते हैं, कहते भी हैं कि ठीक है अन्य धर्मों की शिक्षाओं में भी कठोरता है, निर्देश हैं कुछ। परन्तु उसके मानने वाले या तो अब उनके अनुसार काम नहीं करते अथवा उनमें प्रस्थितियों के अनुकूल बदलाव कर लिया है तथा इस शिक्षा को ज़माने की शिक्षानुसार कर लिया है। और इस बात पर इनका ज़ोर है कि इसी प्रकार अब क़ुरआन-ए-करीम को भी इस ज़माने के अनुकूल, इसके आदेशों को ढालने की आवश्यकता है। अतः इससे यह बात तो प्रमाणित हो गई कि इनके अनुसार इनकी शिक्षाएँ अब ख़ुदा तआला के द्वारा भेजी गई शिक्षाएँ नहीं रहीं बल्कि इंसानो द्वारा बनाई हुई शिक्षा रह गई है और यह होना था क्यूँकि इस ज्ञान के रहने या इसके अनुसार कार्य करने वालों के रहने का ख़ुदा तआला का वादा नहीं। परन्तु क़ुरआन-ए-करीम में जब अल्लाह तआला ने यह ऐलान फ़रमाया कि اِنَّا نَحۡنُ نَزَّلۡنَا الذِّکۡرَ وَاِنَّا لَہٗ لَحٰفِظُوۡنَ अनुवाद- इस ज़िक्र अर्थात क़ुरआन-ए-करीम को हमने ही उतारा है और हम ही इसकी सुरक्षा करेंगे, तो इस सुरक्षा के फिर प्रबन्ध भी फ़रमाए।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस आयत के विभिन्न अवसरों पर, विभिन्न किताबों में इसकी तफ़सीर फ़रमाई है। एक स्थान पर आप फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला की अनन्त काल से यह आदत है कि जब एक क़ौम को किसी कार्य से मना करता है तो अवश्य ही उसके विधान में यह होता है कि कुछ लोग इनमें से इस कार्य को अवश्य करेंगे। जैसा कि उसने तौरैत में यहूदियों को मना किया था कि तुम तौरैत तथा दूसरी ख़ुदा की किताबों में परिवर्तन न करना। अतः उनमें से कुछ लोगों ने परिवर्तन किया, उसको बदला

परन्तु क़ुरआन-ए-करीम में यह नहीं कहा गया कि तुम क़ुरआन-ए-करीम में परिवर्तन न करना, उसको न बदलना। बल्कि यह कहा गया कि اِنَّا نَحۡنُ نَزَّلۡنَا الذِّکۡرَ وَاِنَّا لَہٗ لَحٰفِظُوۡنَ फिर आप फ़रमाते हैं कि यह आयत स्पष्ट रूप से बतला रही है कि जब एक क़ौम पैदा होगी कि इस ज़िक्र (क़ुरआन-ए-करीम) को दुनया से मिटाना चाहेगी, उस समय ख़ुदा आसमान से अपने किसी दूत के द्वारा इसकी सुरक्षा करेगा। अतः समय समय पर ये लोग क़ुरआन की शिक्षाओं पर आपत्ति करके इस शिक्षा को मिटाना चाहते हैं क्यूँकि उनकी अपनी शिक्षाएँ या तो मिट गईं हैं अथवा केवल किताब में सीमित होकर रह गईं हैं। पिछले दिनों ये विभिन्न माध्यम आजकल मैसेज भेजने के अथवा ट्वीट करने के हैं, वह्टस एपप इत्यादि जी, इस पर एक छोटी सी फ़िल्म चल रही थी जिसमें दो लड़के एक किताब में से जिसके कवर पर क़ुरआन लिक्खा हुआ था, लोगों को कुछ आयतें या अंश पढ़कर सुना रहे थे कि यह कैसी शिक्षा है। प्रत्येक को जब यह पता चलता था कि यह क़ुरआन-ए-करीम की शिक्षा है (जैसा कि बाहर लिक्खा हुआ था) इस्लाम की शिक्षाओं की बुराईयाँ कर रहा था। कुछ देर के बाद उन लड़कों ने इस किताब के कवर को उतार दिया और दिखाया कि यह इस्लाम की नहीं, यह बाईबल की शिक्षा है, क्यूँकि यह बाईबल है जो हम पढ़ रहे थे। तो किसी ने इस पर कोई नकारात्मक टिप्पणी नहीं की, इस्लाम का नाम आता है तो तुरन्त नकारात्मक टिप्पणी। बस, हंस कर चुप हो गए सभी। तो यह तो उनका हाल है। यदि एक मुसलमान कुकर्म करता है तो इस्लाम से सम्बंधित कर देते हैं और यदि कोई अन्य धर्म वाला करता है तो कहते हैं कि बेचार असमर्थ है पागल है। हम मानते हैं कि कुछ मुस्लिम गुटों के इस्लाम के नाम पर बुरे कर्मों ने इस्लाम को बदनाम किया है परन्तु इस पर क़ुरआन-ए-करीम की शिक्षा को दोषी बनाना और चरम सीमा तक चले जाना भी इस्लाम के विरुद्ध दिलों के द्वेष एंव घृणा का प्रतीक है। इसका एक अत्यंत प्रतीक तो आजकल अमरीका के एक सदर के प्रत्याशी का इस्लाम तथा मुसलमानों के विरुद्ध बोलना है।

अतः इस्लाम के विषय में जो चाहे बोलते रहें परन्तु इस्लाम की सुन्दर शिक्षा की तुलना न किसी धर्म की शिक्षा कर सकती है तथा न ही इनके अपने बनाए हुए क़ानून कर सकते हैं। ये कहते हैं कि हमने प्रस्थितियों के अनुसार क़ानून बदल दिए। अल्लाह तआला ने इस ज़माने में भी अपने वादे के अनुसार क़ुरआन-ए-करीम की सुरक्षा हेतु एक दूत को भेजा जिन्होंने इस्लाम की सुन्दर शिक्षा से हमें अवगत कराया। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक स्थान पर फ़रमाते हैं कि क़ुरआन-ए-करीम जिसका दूसरा नाम ज़िक्र है उस आरज़्मिक ज़माने में इंसान के भीतर छुपे हुए तथा भूले हुए सत्य एंव वरदानों को याद दिलाने के लिए आया था। अल्लाह तआला के उस वादे के अनुसार कि اِنَّا لَہٗ لَحٰفِظُوۡنَ इस ज़माने में भी आसमान से एक अध्यापक आया जो اٰخرین منھم لما یلحقوا بھم का यथार्थ एंव वादे का पूरक है तथा वही है जो तुम्हारे बीच बोल रहा है। अतः मुबारक हैं वे लोग जो इस सिलसिले का सम्मान करते हैं अर्थात आपकी जमाअत में शामिल हैं।

फिर आपने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने अपने वादे के अनुसार क़ुरआन शरीफ़ की प्रतिष्ठा को स्थापित करने के लिए चौधवीं शताब्दी के सिर पर मुझे भेजा है। फिर फ़रमाया कि क़ुरआन-ए-करीम के

समर्थन एंव सहायताएँ हमारे संग हैं ये आज किसी अन्य धर्म के अनुयायिओं के भाग्य में नहीं। जो गिरोह या लोग तलवार के ज़ोर से इस्लाम को फैलाने का दावा करते हैं, वास्तव में इस्लाम विरोधी शक्तियों के लिए काम कर रहे हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हमें स्पष्ट रूप से बता दिया कि यह ज़माना तलवार के जिहाद का ज़माना नहीं है और तलवार के जिहाद की अनुमति भी उन विशेष प्रतिबन्धित प्रस्थितियों के कारण मिली थी जो इस्लाम के आरम्भिक ज़माने में पैदा हुए थे कि दुश्मन इस्लाम को तलवार के ज़ोर से नष्ट करना चाहता था। इस्लाम अमन और प्यार की शिक्षा से भरा पड़ा है। मुसलमानों को भी बताना होगा कि आपस के वद्ध और विनाश तथा गुट बन्दी से तुम इस्लाम को बदनाम कर रहे हो। यद्यपि हमारे पास अधिक साधन तो नहीं हैं परन्तु जिस सीमा तक हम प्रेस मीडिया तथा विभिन्न साधनों के द्वारा यह काम कर सकते हैं, प्रत्येक देश में और प्रत्येक नगर में, करने चाहिएँ। इस समय दुनया को इस्लाम की वास्तविक छवि दिखाना अत्यधिक आवश्यक है।

पिछले दिनों यहाँ ब्रिटिश पार्लिमैंट में गलास्को के एक एम पी ए ने इस्लाम की वास्तविकता के बारे में अहमदिया जमाअत के प्रसंग में बताया, यह बताकर कहा कि इस्लाम और अमन व शांति की शिक्षानुसार काम करने वाले अहमदी मुसलमान हैं तथा मैं इनके गलास्को में एक पीस सिम्ज़ोज़ियम था, उसमें शामिल हुई थी और बड़ी उसने प्रशंसा की। इस पर वहीं बैठी हुई गृह मंत्री होम सैक्रेट्री ने भी कहा कि जो इस्लाम अहमदी पेश करते हैं वह वास्तव में उससे बिल्कुल भिन्न है जो इस्लाम कट्टर पंथी दिखाते हैं तथा वास्तव में अहमदी लोग शांति प्रिय नागरिक हैं और सत्य यह है कि अहमदी कोई नई शिक्षा प्रस्तुत नहीं करते बल्कि क़ुरआन-ए-करीम की शिक्षा पेश करते हैं। पिछले दिनों जब मैं जापान में था तो वहाँ भी शिक्षित वर्ग का यह इज़हार था बल्कि एक ईसाई पादरी ने भी कहा कि इस्लाम की शिक्षा जो तुम क़ुरआन-ए-करीम के प्रकाश में बता रहे हो, उसको जानने की जापानियों को बड़ी आवश्यकता है बल्कि दुनया को आवश्यकता है। अब यह जापान की जमाअत का भी काम है कि व्यापक योजना बनाकर इस बात को ताज़ा रक्खें। इसी प्रकार यहाँ भी इस देश में भी, यू.के. में भी, तथा विश्व के अन्य देशों में भी इस्लाम की सुन्दर शिक्षा का बोध जिस प्रकार हमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के द्वारा हुआ है उसे फैलाएँ।

अतः इस ज़माने में क़ुरआन-ए-करीम की सुरक्षा का अल्लाह तआला ने आपके द्वारा काम लिया है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से काम लिया है तथा यही काम प्रत्येक अहमदी का है कि प्रत्येक वर्ग एंव प्रत्येक व्यक्ति तक इस पैग़ाम को पहुंचाएँ तथा प्रत्येक स्थान पर इस काम को करते हुए आप अलैहिस्सलाम की बैअत में आने का दायित्व पूरा करें। इस समय मैं कुछ उदाहरण पेश करता हूँ जो इस्लाम की शांति की शिक्षा प्रकट करते हैं। क़ुरआन-ए-करीम में अल्लाह तआला फ़रमाता है एक स्थान पर कि لَآ اِكْرَاهَ فِي الدِّيْنِ अर्थात दीन में कोई ज़ोर ज़बरदस्ती नहीं। फिर फ़रमाया कि وَلَوْ شَآءَ رَبُّكَ لَاٰمَنَ مَنْ فِي الْاَرْضِ كُلُّهُمْ جَمِيْعًا ؕ اَفَاَنْتَ تُكْرِهُ النَّاسَ حَتّٰى يَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ ﴿۹۹﴾ [۱۰:۹۹] अनुवाद- और यदि अल्लाह तआला चाहता तो जो भी धरती पर बसते हैं इकट्ठ सबके सब ईमान ले आते। अतः जब ख़ुदा भी विवश नहीं करता तो क्या तू लोगों को विवश करेगा कि वे ईमान ले आएँ। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक स्थान पर फ़रमाते हैं कि इस्लाम ने कहीं ज़ोर ज़बरदस्ती का नियम नहीं सिखाया। अब आँहज़रत सलल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

को भी अल्लाह तआला फ़रमाता है कि لَاٰمَنَ مَنۡ فِی الۡاَرۡضِ کُلُّهُمۡ جَمِیۡعًا ؕ यदि अल्लाह तआला चाहता तो फिर प्रत्येक जो धरती पर मौजूद है वह ईमान ले आता परन्तु अल्लाह तआला ने नहीं चाहा इस लिए आँहज़रत सलल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अभिलाषा के बावजूद अल्लाह तआला ने यही फ़रमाया कि तुम्हारे कहने से भी यह नहीं होगा। अतः इस बात को सदैव याद रखना चाहिए और यही एक शिक्षा है जो बड़े स्पष्ट रूप से ज़ाहिर करती है कि इस्लाम में ज़ोर ज़बरदस्ती नहीं है। फिर आप फ़रमाते हैं कि इस्लाम में लड़ाईयाँ तीन श्रेणियों से बाहर नहीं। अर्थात तीन प्रकार की लड़ाईयाँ हैं इस्लाम में, जो कठोरता आई अथवा अनुमति है शस्त्र उठाने की। आत्मसुरक्षा के लिए अर्थात यदि अपनी सुरक्षा की आवश्यकता हो (अपनी रक्षा करने के लिए, बचाव के लिए, यदि कोई तुम पर आक्रमण करे तो शस्त्र उठाया जा सकता है) दंड के रूप में अर्थात हत्या के बदले हत्या (उस समय जब किसी को दंड देना हो तथा दूसरों ने आक्रमण किया है, ख़ून बहाया है तो उस अवस्था में दंड के रूप में चाहे वह युद्ध है अथवा सामान्य अवस्था है, उस समय हथ्यार प्रयोग किया गया अथवा दंड दिया गया है या हत्या की गई है) तथा नज़्र तीन स्वतंत्रता की स्थापना के लिए अर्थात विरोध्यिों का ज़ोर तोड़ने हेतु जो किसी की मुसलमान होने के कारण हत्या करते थे। क़ुरआन में स्पष्ट आदेश है कि दीन के प्रसार के लिए तलवार मत उठाओ और दीन में विद्यमान ख़ूबियों को पेश करो तथा नेक चलन से अपनी ओर खींचो और यह मत सोचो कि आरज़्भिक इस्लाम में तलवार उठाने का आदेश हुआ क्यूँकि वह तलवार दीन के प्रसार के लिए नहीं खींची गई थी बल्कि दुश्मन के आक्रमण से स्वयं को बचाने के लिए अथवा शांति स्थापना के लिए खींची गई थी परन्तु दीन के लिए ज़ोर ज़बरदस्ती करना कभी उद्देश्य नहीं था। फ़रमाया- जो मुसलमान कहलाकर केवल यही बात जानते हैं कि इस्लाम को तलवार से फैलाना चाहिए वे इस्लाम की विशेषताओं को स्वीकार नहीं करते। दीन की विशेषताओं को पेश करो और वे तभी पेश हो सकती हैं जब स्वयं ज्ञात हों, अपने ज्ञान को बढ़ाओ। तथा दूसरे फ़रमाया कि नेक नमूनों से अपनी ओर खींचो, अपने नेक नमूने स्थापित करके दिखाओ ताकि लोग तुम्हारी ओर आएँ।

अतः यह प्रत्येक अहमदी का बहुत बड़ा कर्तव्य है कि दीन की वास्तविक शिक्षा को पेश करने के लिए क़ुरआन-ए-करीम का ज्ञान प्राप्त करें और फिर अपने नेक नमूने क़ायम करके दुनया को अपनी ओर खींचें और यही ज्ञान तथा कर्म है जिसके द्वारा इस ज़माने में हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की ग़ुलामी में आते हुए क़ुरआन-ए-करीम और इस्लाम की सुरक्षा के कार्य में भागीदार बन सकते हैं तथा दुनया को बता सकते हैं कि यदि दुनया में वास्तविक शांति स्थापित करनी है तो क़ुरआन-ए-करीम के द्वारा ही हो सकती है। क़ुरआन-ए-करीम ने एक स्थान पर इस्लाम क़बूल न करने वालों का चित्रण इस प्रकार किया है कि وَقَالُوۡۤا اِنۡ نَّتَّبِعِ الۡهُدٰی مَعَكَ نُتَخَطَّفۡ مِنۡ اَرۡضِنَا ؕ अर्थात- वे कहते हैं कि हम उस हिदायत की जो तुझ पर उतरी है, आज्ञापलन करें तो अपने देश से उचक लिए जाएँगे। अतः इस्लाम की शिक्षा पर आपत्ति इस कारण से नहीं कि अत्याचार तथा ज़ोर ज़बरदस्ती की शिक्षा है बल्कि स्वीकार न करने वाले इस्लाम की शिक्षा पर जो आपत्तियाँ कर रहे हैं वह यह है कि यदि तेरी शिक्षानुसार कार्य करें जो अमन वाली शिक्षा है, जो सलामती वाली शिक्षा है तो आस पास की क़ौमें हमें नष्ट कर दें। अतः इस्लाम की शिक्षा तो मित्रता का हाथ बढ़ाने की शिक्षा है, अमन एंव सलामती क़ायम करने की शिक्षा है, अमन तथा मुहब्बत का पैग़ाम देने की शिक्षा है। यदि

कुछ मुसलमान गिरोह इसके अनुसार कर्म नहीं करते तो उनका दुर्भाग्य है। ये लोग अपने स्वार्थ के लिए दुनया में अपने भूगौलिक तथा राजनैतिक प्रभुत्व प्राप्त करने के लिए संकट बनाए हुए हैं। मुस्लिम देशों के फ़साद में भी कई बड़े देश भागीदार हैं और अब तो विभिन्न पश्चिमी मीडिया पर स्वयं उनके अपने लोग ही कहने लग गए हैं कि मुसलमानों के कट्टर पंथी संगठन हमारी सरकारों की पैदावार हैं जो हमने ईराक़ के युद्ध के पश्चात अथवा शाम के हालात के बाद पैदा किए हैं। इस बात से मैं मुसलमानों तथा उन लोगों को जो इस्लाम के नाम पर मुसलमान कहलाते हुए कट्टर वाद को तथा इस्लाम की अनुचित शिक्षा को प्रकट कर रहे हैं, दायित्व से बरी नहीं करता परन्तु इसके द्वारा इस आग को भड़काने में बड़ी शक्तियों का सहयोग है। अभी भी एक ओर तो कट्टर पंथी लोगों को नष्ट करने की बातें होती हैं, उन पर बम गिराए जाते हैं तथा दूसरी ओर उनको शस्त्र देने वालों और अनुचित साधनों के द्वारा माल पहुंचाने वालों अथवा अर्थिक आदान प्रदान करने वालों की ओर से उन लोगों ने जानकारी के होते हुए कि किस प्रकार यह सब कुछ हो रहा है, आँखें बन्द की हुई हैं।

अतः दुनया की शांति एंव सलामती का विनाश करने वाले केवल ये मुसलमान गुट ही नहीं जो इस्लाम की शिक्षा के विरुद्ध चलते हुए अन्याय एंव फ़साद कर रहे हैं बल्कि बड़ी सरकारें भी हैं जो अपने स्वार्थ को प्राथ्मिकता देती हैं और दुनया का अमन उनकी दृष्टि में निज़्ज़ एंव मूल्यहीन चीज़ है। एक वास्तविक मुसलमान तो यह जानता है कि ख़ुदा तआला ही सलाम है वह अपनी सृष्टि की सलामती चाहता है तथा वास्तविक मुसलमानों में निःसन्देह अहमदी ही है जो इस बात का बोध रखते हैं कि अल्लाह तआला ने मानवता को सलामती देने और विश्व में अमन व सलामती स्थापित रखने के लिए कितने आदेश दिए हैं, कितना अधिक मार्ग दर्शन किया है। ख़ुदा तआला एक स्थान पर क़ुरआन-ए-करीम में फ़रमाता है-

وَقِيْلِهٖ يٰرَبِّ اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ قَوْمٌ لَّا يُؤْمِنُوْنَ ۝ [الزخرف:٨٨] فَاصْفَحْ عَنْهُمْ وَقُلْ سَلٰمٌ ؕ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ۝ الزخرف:٩٨

अनुवाद- और जब उसने कहा कि हे मेरे रब, ये लोग ईमान नहीं लाते तो अल्लाह तआला फ़रमाता है कि तू उनको क्षमा कर तथा इतना कह दे कि सलाम, तुम पर सलामती हो अतः निकट भविष्य में ही वे जान लेंगे कि यथार्थ क्या है इस्लाम का।

अतः आँहज़रत सलल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तो अल्लाह तआला ने यह आदेश दिया क़ुरआन-ए-करीम में कि इस्लाम के विरोधियों के समस्त अत्याचारों को देखकर तथा सहन करके केवल यह उत्तर दे कि मैं तुझें सलामती का सन्देश देता हूँ और देता रहूंगा ताकि दुनया में शांति स्थापित हो। अतः जब आँहज़रत सलल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए यह आदेश है तो फिर प्रत्येक मुसलमान के लिए यह आदेश कितना अनिवार्य है। आज भी जब ऐसी प्रस्थितियाँ हैं तो हमारा यह कर्तव्य है कि इसी प्रकार पैग़ाम पहुंचाएँ। हमारा काम अमन और सलामती का पैग़ाम पहुंचाना है। एक सच्चे मुसलमान और इबादुर्रहमान की तो पहचान ही अल्लाह तआला ने यह बताई है कि وَّاِذَا خَاطَبَهُمُ الْجٰهِلُوْنَ قَالُوْا سَلٰمًا ۝ [٢٥:٦٣] और जब मूर्ख लोग उनसे लड़ते हैं तो वे बजाए लड़ने के उनसे यह कहते हैं कि हम तुझारे लिए सलामती की दुआ करते हैं।

अतः यह क़ुरआन की शिक्षा है तथा यही वह शिक्षा है जो प्रत्येक स्तर पर अमन और सलामती स्थापित करने तथा इसके लिए प्रयास करने का आदेश देती है। हममें से प्रत्येक को तथा विशेष रूप से

नौजवानों को किसी भी प्रकार की ग्लानि का शिकार होने की आवश्यकता नहीं है। यह इस्लाम है तथा केवल इस्लाम है जो दुनया में अमन व शांति की ज़मानत बन सकता है और यह क़ुरआन-ए-करीम है तथा केवल क़ुरआन-ए-करीम है जो अमन व सलामती फैलाने की तथा कट्टर वाद
के विध्वंस की शिक्षा देता है।

अतः इस ज्ञान को प्राप्त करने की प्रत्येक को आवश्यकता है इस शिक्षा को अपने ऊपर लागू करने की आवश्यकता है। इस शिक्षानुसार कर्म करें और जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया है कि अपने कर्मों के द्वारा दुनया को बताएँ कि आज क़ुरआन-ए-करीम की सुरक्षा के अल्लाह तआला ने इस ज़माने में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को भेजा है और हमें आप अलैहिस्सलाम को मानने की तौफ़ीक़ देकर इस काम के लिए हमें चुन लिया है। अतः यह सुन्दर शिक्षा दुनया में फैलाने का काम करना प्रत्येक अहमदी का दायित्व है तथा इस दायित्व के निर्वाह के लिए प्रत्येक अहमदी लड़के, लड़की तथा पुरुष, स्त्री को प्रयास करना चाहिए दुनया इस समय आग के गढ़े के जिस किनारे पर खड़ी है, किसी समय भी ऐसी प्रस्थितियाँ हो सकती हैं कि वह इसमें गिर जाए। ऐसे समय पर दुनिया को इस आग में गिरने से बचाने के लिए प्रयास करना तथा अमन व सलामती देने का काम करना एक अहमदी का कर्तव्य है और अहमदी ही कर सकते हैं।

अतः इसके लिए प्रयत्न करने की आवश्यकता है तथा सबसे बड़ा काम इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए अल्लाह तआला से सुदृढ़ सम्बंध पैदा करना है, उसके सम्मुख झुकना है, उसका तक़्वा धारण करना है, उसका तक़्वा अपने हृदय में पैदा करना है तभी हम अपने आपको तथा अपनी पीढ़ियों को भी और दुनया को भी अमन और सलामती दे सकते हैं। ऐसे ही अवसर के लिए इन प्रस्थितियों के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया था कि

आग है पर आग से वे सब बचाए जाएँगे जो कि रखते हैं ख़ुदाऐ जुल्अजायब से प्यार

अतः इस जुल्अजायब तथा सर्वशक्तिमान ख़ुदा से दृढ़ सम्बंध बनाने की आवश्यकता है तथा प्यार में बढ़ने का हमें प्रयास करना चाहिए अल्लाह तआला से। अल्लाह तआला हमें इसका सामर्थ्य प्रदान करे तथा दनयादारों को भी सद्बुद्धि प्रदान करे कि वे ख़ुदा तआला की आवाज़ को सुनें और अपने सुधार का प्रयास करें और विनाश के खड में गिरने से बचें।

ख़ुत्बः जुम्अः के अन्त में हुज़ूर-ए-अनवर ने एक जनाज़ा हाज़िर तथा दो जनाज़े ग़ायब पढ़ाए। उपस्थित जनाज़ा मुकर्रम इनायतुल्लाह अहमदी साहब का था जबकि दूसरा जनाज़ा मुकर्रम मौलवी बशीर अहमद साहब काला अफ़ग़ानाँ दर्वेश क़ादियान का और तीसरा जनाज़ा मुकर्रमः कान्ता बेगम साहिबा वालिदह मुकर्रम डा. तारिक़ अहमद साहब इंचार्ज नूर हस्पताल क़ादियान का था। हुज़र-ए-अनवर ने तीनों मरहूमों का वर्णन फ़रमाते हुए मग़फ़िरत और दर्जों की बुलन्दी के लिए दुआ फ़रमाई।